आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान
सैक्टर-8, द्वारका, नई दिल्ली-110077

राजभाषा ई-पत्रिका

अर्द्धवार्षिक (जुलाई-दिसम्बर 2023)

अंक-5, वर्ष-2023

राजभाषा ई-पत्रिका

अंक-5, वर्ष - 2023

संरक्षक
डॉ. अनुप अन्वीकर
निदेशक

संपादक
डॉ. वंदना शर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादक मंडल
प्रशासनिक अधिकारी
श्रीमती मीनाक्षी भसीन
श्री रघुबर दत्त

विषय सूची **पृष्ठ**

सं.

1. संरक्षक की कलम से 2

2. पुरस्कृत निबंध 3

3. संस्थान की गतिविधियां
   - संस्थान एवं क्षेत्रीय इकाईयों में हिन्दी दिवस माह 8
   - संस्थान में पारंगत प्रशिक्षण 16
   - आईसीएमआर की नई सुविधाओं का उद्घाटन /शिलान्यास एवं संस्थान का वार्षिकोत्सव 17
   - स्वच्छता संबंधी गतिविधियां 22
   - राष्ट्रीय खेल दिवस 24
   - सतर्कता दिवस 25
   - प्रशिक्षण 26

4. संस्थान में सेवा-निवृत्त एवं नई नियुक्तियां 28

राजभाषा ई-पत्रिका में प्रकाशित लेखों से पत्रिका के उल्लेखित सदस्यों की सहमति/असहमति होना अनिवार्य नहीं हैं, इसके लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

संरक्षक की कलम से :-

मुझे बेहद खुशी है कि हम एनआईएमआर की राजभाषा ई-पत्रिका का तृतीय ई-अंक जुलाई-दिसम्बर 2023 आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। राजभाषा ई-पत्रिका का प्रकाशन संस्थान में राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ाने में सहायक होने के साथ ही पर्यावरण हितैषी की दिशा में भी एक पहल कहा जा सकता है। हालांकि ई-पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य तो भारत सरकार के राजभाषा अधिनियम का अनुपालन ही है, किन्तु इसके साथ ही पत्रिका का ई प्रकाशन सरकार के डिजिटल इंडिया की ओर बढ़ते कदमों में भी सहायक कहा जा सकता है, यानि एक पंथ दो काज। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि हम सभी मिलकर राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्व को निभाने में अग्रणी होंगे। सहज, सरल एवं बोलचाल की भाषा के प्रयोग की छूट हमें दी गई है। उसी के तहत हम अपने लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अवश्य कामयाब होंगे।

पत्रिका के इस अंक में हमने हिन्दी दिवस माह के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिताओं के प्रथम पुरस्कृत निबंधों को स्थान दिया है। वैसे तो पत्रिका में कर्मचारियों का पन्ना और किसी वैज्ञानिक का लेख या साक्षात्कार प्रस्तुत किया जाता है किन्तु 14 दिसम्बर 2023 को संस्थान में आईसीएमआर की नई सुविधाओं का उद्घाटन एवं संस्थान के वार्षिक दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। यही कारण है कि पत्रिका के इस अंक को हमने संस्थान में होने वाली गतिविधियों को केन्द्रबिन्दु बनाते हुए इसका विस्तृत उल्लेख किया है अर्थात् "संस्थान की गतिविधियां" शीर्षक के अंतर्गत इस छ:माही के दौरान होने वाली संस्थान की समग्र गतिविधियों को शामिल करने का प्रयास किया गया है जिसके अंतर्गत हिन्दी दिवस माह, संस्थान का वार्षिकोत्सव, स्वच्छता संबंधी गतिविधियां, राष्ट्रीय खेल दिवस एवं सतर्कता जागरुकता सप्ताह संबंधी गतिविधियों को स्थान दिया गया है। ई-पत्रिका के अंत में इस छ:माही में संस्थान से सेवा-निवृत्त एवं नव-नियुक्त कर्मियों को शुभकामनाएं देते हुए उनकी जानकारी प्रस्तुत की गई है।

आशा है कि राजभाषा ई-पत्रिका के इस अंक में दी गई जानकारियां सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। इस संबंध में आपकी प्रतिक्रियाएं एवं सुझाव सादर आमंत्रित हैं। आपके द्वारा भेजे गए विचारों एवं सुझावों के लिए हम सदा आपके आभारी रहेंगे। आपके सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं हमारे लिए प्रेरणा का कार्य करेंगी और आपके व हमारे बीच विचार-संप्रेषण का माध्यम बनेंगी।

डॉ. अनुप अन्वीकर

हिन्दी दिवस 2023 के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता (अधिकारी/कर्मचारी) में प्रथम पुरस्कृत निबंध

विषय :- बढ़ता जलवायु परिवर्तन : जिम्मेदार कौन?

(डॉ. तरुण वत्स, वैज्ञानिक-बी)

"हम गरीबी उन्मूलन की दिशा में कदम उठाने वाली पहली पीढ़ी हैं और जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए आखिरी पीढ़ी"

संयुक्त राष्ट्र संघ के भूतपूर्व महासचिव बन की-मून द्वारा कही गई उपर्युक्त पंक्तियों में वैश्विक स्तर की दो बड़ी चुनौतियों को बताया गया है। इसमें जलवायु परिवर्तन विशेष रुप से महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र मौसम एजेंसी द्वारा दी गई रिपोर्ट में जुलाई 2023 को ऐतिहासिक तौर पर सबसे गर्म सूचित किया गया है। साथ में संयुक्त राष्ट्र के जलवायु विभाग संगठन के सचिव क्रिस हैरिट का मई, 2023 में दिया गया कथन, जिसमें संभावना बताई गई थी कि अगले पांच वर्षों में से एक वर्ष सबसे अधिक गर्म होगा, सच होता प्रतीत हो रहा है।

जलवायु परिवर्तन वैश्विक स्तर पर या क्षेत्रीय स्तर स्वरुप में दीर्घकालिक बदलाव है। यह परिवर्तन निरंतर पृथ्वी पर चलने वाली प्रक्रिया है जो सैकड़ों एवं हजारों वर्षों में होती हैं, परंतु विगत सदियों में मानवजनित कारणों से इस प्रक्रिया में काफी तेजी आई है। इसकी वजह से पृथ्वी का तापमान सामान्य दर से ज्यादा दर पर बढ़ रहा है।

जलवायु परिवर्तन को वैज्ञानिकों द्वारा स्थापित पूर्व-औद्योगिक आधारों पर तय किया जाता है। इसके लिए 1750-2000 की अवधि में तय तापमान को संदर्भित किया गया है। पृथ्वी का सतह तापमान जो पूर्व-औद्योगिक काल से लगभग 0.8 सेल्सियस बढ़ गया है, उससे होने वाले प्रभावों को लेकर विश्व में इस बदलाव के लिए चिंता होने लगी है।

प्राकृतिक कारणों जैसे ज्वालामुखी, महासागरीय धाराएं एवं वायु मंडल में विद्यमान जलवाष्प आदि जलवायु परिवर्तन के कारण हैं, परन्तु औद्योगिक काल के बाद जीवाश्म ईधनों पर आधारित मशीनी युग में ऐसी गैसों का अधिक उत्सर्जन किया है जिससे वायुमंडल स्वाभाविक तौर से अधिक गर्म होता जा रहा है। ये गैसें जिन्हें ग्रीन हाउस गैस बोला जाता है उसमें कार्बन डाईआक्साइड प्रमुख है जिसका विगत सदियों में 30 प्रतिशत से अधिक उत्सर्जन हुआ है। यह पृथ्वी के आठ लाख वर्षों के स्तर के बराबर है। इसके अलावा मीथेन (140 प्रतिशत), नाईट्रस ऑक्साइड एवं अन्य गैसों की वजह से भी पृथ्वी के तापमान में बढ़ोतरी हुई है। ये गैसें सूर्य की गर्मी को पृथ्वी के वायुमंडल में ही रोक लेती है और इनकी बढ़ोतरी से अधिक गर्मी तापमान को पृथ्वी की सतह पर बढ़ाती है।

इससे होने वाले दुष्प्रभावों को वैज्ञानिकों एवं विशिष्ट लोगों ने दूरगामी एवं अपरिवर्तनीय बताया है। यदि पृथ्वी का सतह तापमान 1.5 सेल्सियस से अधिक होता है तो आने वाले वर्षों के इसके भयानक परिणाम होंगे। इसमें

बाढ़, सूखा, समुद्र जलस्तर में वृद्धि, भूस्खलन, खाद्यानों में कमी, जैव-विविधता व कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव और मानव स्वास्थ्य का बिगड़ना शामिल है।

पूर्व औद्योगिक काल के पैमाने के हिसाब से वैज्ञानिक 3 स्तरों पर विभिन्न देशों के कार्बन डाई आक्साइड उत्सर्जन को जिम्मेदार मानते हैं।

1. वह देश जो ऐतिहासिक तौर से गैसों का उत्सर्जन करते रहे हैं जिसमें अमेरिका व यूरोपिय देश शामिल हैं। अमेरिका ने सबसे ज्यादा कार्बन डाईआक्साइड उत्सर्जन लगभग 500000 मिलियन मैट्रिक टन किया है।
2. इसमें वह देश शामिल हैं जो सालाना वर्तमान में अधिक कार्बन उत्सर्जन करते हैं, जिसमें चीन (12000 मिलियन मैट्रिक टन) अमेरिका, भारत (3000 मिलियन मैट्रिक टन) शामिल हैं।
3. प्रति व्यक्ति सालाना कार्बन डाईआक्साइड उत्सर्जन में भी अमेरिका (भारत से प्रति व्यक्ति आठ गुना ज्यादा) व यूरोपीय देश शामिल हैं।

बढ़ते जलवायु परिवर्तन को देखते हुए सन् 1997 में उल्लेखनीय क्योटो (जापान) समझौता हुआ था, जिसमें विश्व के लगभग 194 देशों ने हस्ताक्षर किए थे। परन्तु इसके परिणामों को देखते हुए दोबारा से नई संधियों की जरुरत को बढ़ावा दिया गया, जिसके परिणाम स्वरुप 02 दिसम्बर 2015 को पेरिस समझौता हुआ। पेरिस समझौता अत्यंत महत्वपूर्ण समझौता है क्योंकि इसमें हर विकसित एवं विकासशील देश द्वारा स्वयं निर्धारित राष्ट्रीय स्तर पर कार्बन डाईआक्साइट के मापदंड़ों को तय करना एवं उत्सर्जन को कम करना है। इसमें उल्लेखित रेचेट तंत्र के प्रावधान हर वर्ष सभी देशों को अधिक मापदंड के साथ उत्सर्जन को कम करने की जिम्मेदारी व जवाबदेही भी तय करता है। विकसित देशों ने इस समझौते में 100 अरब डालर की पूंजी हर वर्ष जलवायु कोष में जमा करने का प्रण भी लिया था। विकसित देश (लगभग-40 संख्या) ने विकासशील एवं कम विकसित देशों को आर्थिक मदद, तकनीकी हस्तांतरण एवं जलवायु परिवर्तन के द्वारा आपातकाल में वित्तीय सहायता की भी घोषणा की थी।

अंतर्राष्ट्रीय पैनल जलवायु परिवर्तन की विशेष रिपोर्ट ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि 2050 तक वैश्विक स्तर पर कार्बन डाईआक्साइड नेट-तटस्थ (0 प्रतिशत) नहीं होता है तो इसके परिणाम इस सदी 2100 एवं अगली सदी में भी देखे जाएंगे। अमेरिका की संस्था नेशनल ऐरोनाटिक्स एवं स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन ने भी स्पष्ट कर दिया है कि अगर पृथ्वी का सतह तापमान 1.5 अंश सेल्सियस से ऊपर जाता है और वर्ष 2100 तक यह 2 डिग्री सेल्सियस होता है तो अगली सदी में 20 गुना अधिक दर से गर्मी बढ़ेगी।

जलवायु परिवर्तन रोकने के लिए वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों द्वारा किए जाने वाले प्रयास अलग-अलग हैं। विकसित देशों की जिम्मेदारी एवं जवाबदेही भी अधिक है, परन्तु वर्तमान में विकसित देश पूर्ण रुप से अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रहे हैं जिसमें विकासशील देशों के साथ उनकी तीखी असहमतियां हैं। विकसित देशों ने अब तक अपने 100 अरब डालर के वादे को पूरा नहीं किया है। विकासशील देशों की समस्या उनका गरीबी उन्मूलन से लेकर नई अक्षम ऊर्जा, समुचित एवं समायोजित रुप से नई तकनीकों को लाना है, जिसके लिए वित्त की आवश्यकता है। यदि विकासशील देश अक्षम ऊर्जा के संसाधनों एवं साफ ऊर्जा पर बदलाव करते हैं तो इसके लिए

उन्हें आज की दर से 4.5 से 6 ट्रिलियन डालर की आवश्यकता होगी। भारत की कुल अर्थव्यवस्था ही 3.7 ट्रिलियन डालर है और जलवायु परिवर्तन के लिए किए गए प्रयासों में भारत को 2.5 ट्रिलियन वित्त की आवश्यकता है।

भारत, चीन एवं अन्य विकासशील देश अपने विकास के लिए अक्षम ऊर्जा के साधनों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। स्वयं चीन दुनिया का पहला देश है जिसने अक्षम ऊर्जा के संसाधनों में सबसे अधिक निवेश किया है। भारत भी नई तकनीकों और ऊर्जा के नए साधनों को बढ़ावा दे रहा है जैसे पैरिस समझौतें में फ्रांस के साथ मिलकर किया गया अंतर्राष्ट्रीय सौर मिशन जिसमें 1000 मेगावाट ऊर्जा के लिए वैश्विक तौर पर धन जुटाना है।

जलवायु परिवर्तन एक सामूहिक जिम्मेदारी है। मानव जीवन आजीविका, पर्यावरण संबंधी एवं अन्य उद्योगों का ध्यान रखकर सभी देशों द्वारा सामान्य, परंतु भिन्न-भिन्न लक्ष्यों का चरणबद्ध तरीके से योगदान जरुरी है। मानव महत्वाकांक्षा एवं प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए संसाधनों का न्याय संगत तरीके से उपयोग न करना ही जलवायु परिवर्तन का कारण बना है। यह दशक 2020-2030 अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें सभी देशों के द्वारा लिए गए लक्ष्य का कार्यान्वयन जरुरी है। सन् 2030 तक पृथ्वी के तापमान को बढ़ाने वाली गैसों के शमन के लिए लगभग 41 प्रतिशत का लक्ष्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए सभी देशों को समुचित विकास के साथ सहायता एवं सहयोग के साथ चलने की आवश्यकता है, जिसके लिए अंतर्राष्ट्रीय मॉनेटरी संघ की प्रबंधक निदेशक क्रिस्टिन लैगाड का कथन सत्य होता प्रतीत हो रहा है। "यह एक सामूहिक प्रयास है। इसकी जिम्मेदारी एवं जवाबदेही सबकी है और इसमें देरी अब नहीं हो सकती"।

हिन्दी दिवस 2023 के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता (अधिकारी/कर्मचारी) में प्रथम पुरस्कृत निबंध

विषय :- बढ़ता जलवायु परिवर्तन : जिम्मेदार कौन?

(श्रीमती कमला नेगी, तकनीकी अधिकारी-बी)

सृष्टि अपार विस्मयों का केन्द्र है। समुद्र इसकी देहरी है जो असीम और अनन्त होते हुए भी एक मर्यादा में जीता है। इसके ध्रुवीय क्षेत्र विशालकाय ग्लेशियरों से ढके हुए इसके प्रहरी का कार्य करते हैं और सूर्य की किरणें पड़ने पर चॉदी के समान चमकते हैं। इसके वन अपनी लंबी-लंबी बॉहें फैलाए बादलों को बुलाते हैं और पृथ्वी पर 'प्राण वायु' का संतुलन बनाते हैं। बादल, समुद्र के खारे पानी को वाष्प में बदलकर पृथ्वी पर स्वच्छ जल की वर्षा करते हैं। सृष्टि का यह जीवन चक्र अपार और अनन्त जीव-जन्तुओं का जीवन अनन्त काल से एक संतुलन में चला आ रहा है। प्रकृति एक नियम से इसे चलाते हुए आगे बढ़ती जाती है।

परन्तु पृथ्वी पर अपने को श्रेष्ठ समझने वाले मनुष्य ने अपने अवांछित कार्यों से पृथ्वी के इस संतुलन को गड़बड़ा दिया है। "उसने पृथ्वी के ठोस द्रव और गैसीय संतुलन को बिगाड दिया है"। इससे पृथ्वी के शीत और ताप के संतुलन बिगड़ गए और ऋतु चक्र प्रभावित हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि मानव को अपने इस महापाप का विनाश 'ग्लोबल वार्मिंग' या 'विश्व तापीकरण' के रुप में भुगतना पड़ रहा है जो कि हम देख रहे हैं बहुत ही भयंकर और विनाशकारी सिद्ध हो रहा है। बीते महीनों में जुलाई-अगस्त की बात करें तो भारत के हिमालयी क्षेत्र के राज्य उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश ने इस जलवायु परिवर्तन के भारी विनाश को झेला है। इसमें हजारों लोगों ने अपनी जानें गवाई, सड़क मार्ग, रेल मार्ग टूट गए या बह गए और अरबों रुपये की संपत्ति का नुकसान हुआ। कई हजार लोगों को अपने घरों से आश्रयों को छोड़कर जाना पड़ा और कईयों के आशियानें ताश के पत्तों की तरह ढह गए।

औद्योगीकरण या विकास के नाम पर जो हो रहा है उसका दुष्प्रभाव हमारी पृथ्वी पर पड़ रहा है। कहीं सूखा, कहीं पर बाढ़, देश की आर्थिक राजधानी मुम्बई अक्सर मानसून के समय जलमग्न हो जाती है। उत्तराखंड जैसे राज्य या तो एक दम सूखे का सामना करते हैं या मौसम का मिजाज बदलते ही केदारनाथ जैसी भयंकर विनाशकारी महा-आपदा झेलते हैं (2013)।

जैसाकि हमारा आज का विषय है जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कौन? इसके लिए हम सूर्य को या प्रकृति को दोष नहीं दे सकते। इसके लिए मनुष्य स्वयं जिम्मेदार है। उसने प्रकृति के साथ जीना न सीखकर प्रकृति को अपनी सहुलियत के हिसाब से चलाने की कोशिश की, जिसके दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। हिमाचल प्रदेश की बाढ़ से नुकसान, उत्तराखंड में भूमि का अपरदन और उत्तर पूर्वी राज्य जहां सबसे अधिक वर्षा का रिकार्ड पाया जाता है। मेघालय में चेरापूंजी जैसे राज्य पेयजल की समस्या से ग्रसित हैं उसी प्रकार पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग, सिक्किम आदि राज्यों में भी इसी प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहा है। यह सब ऋतु-चक्र में परिवर्तन के कारण हो रहा है। पिछले 20-25 सालों का रिकार्ड देखें तो हम पाते हैं कि सर्दियॉ अब देर से आती है। कई बार नवम्बर तक हमें गर्म कपड़ों की आवश्यकता नहीं पड़ती और वर्षा के क्रम चक्र में इसका प्रभाव पड़ा है, जिसका असर फसलों

और खेती पर पड़ा है। फलस्वरुप कम अनाज की पैदावार हो रही है, विशेषकर धान और गेहूं की उपज पर इसका मुख्य प्रभाव पड़ा है और दोनों ही फसलें हमारा मुख्य भोजन है।

ग्लोबल वार्मिंग या विश्वतापीकरण का प्रभाव पूरे विश्व पर पड़ा है जैसे अत्यधिक गर्मी की वजह से विश्व के कई देशों के जंगलों में आग लगी है और यह लंबे समय पर नियंत्रण में नहीं आ सकी जिसकी वजह से कई वन्य-जीव जल गए। कनाडा, अमरीका और यूरोप के कई देश इसका ज्वलंत उदाहरण हैं। इसके कारण समुद्रतटीय देशों ने सुनामी (विनाशकारी समुद्री तूफान) का सामना किया और जान-माल, पशुधन का नुकसान हुआ।

जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारण :-

1. किसी स्थान की जलवायु के मुख्य नियंत्रक होते हैं वहां का अक्षांशीय विस्तार समुद्र से दूरी, समुद्री धाराएं, दबाव, ऊंचाई, समुद्री पवन की दिशाएं, वहां की भूमि के ढलान, मृदा की प्रकृति इत्यादि।
2. जलवायु को प्रभावित करने वाले अन्य कारक।
   i. ज्वालामुखी विस्फोट जिनसे अत्यंत गर्म गैसें निकलती है और वातावरण को गर्म कर देती है।
   ii. ग्रीन हाउस गैसों का असर या सौर विकिरण में बदलाव।
3. पृथ्वी की कक्षा में परिवर्तन भी इसका एक मुख्य कारण है।
4. जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक उपयोग करने से सीओटू या कार्बन-डाई-आक्साइड की वातावरण में अधिकता, जैसे पेट्रोल, डीजल इत्यादि।
5. औद्योगिकीकरण और विकास के नाम पर अत्यधिक वृक्षों का कटाव, परिणामस्वरुप जंगलों की कमी, पहाड़ों को काटकर वहां सड़कों का निर्माण जो कि वहां के लिए जोखिम भरा है। पहाड़ों पर सड़को का निर्माण करने के पश्चात् कटे हुए पहाड़ों पर वृक्षारोपण करना, ताकि मृदा के अपरदन को रोका जा सके। जहां भी ऊसर जमीन हो वहां वृक्ष लगाने चाहिए और उनकी उचित देखभाल भी होनी चाहिए। वन हमें हमारी प्राण-वायु आक्सीजन देते हैं वह वर्षा के कारक हैं, वृक्षों की जड़े मिट्टी को जकड़े रहती है और भूस्खलन जैसी घटनाओं को नहीं होने देते।
6. अत्यधिक ताप के कारण पृथ्वी और समुद्री जल का वाष्पीकरण हो जाता है और हवा में आर्द्रता बढ़ जाती है जिसके फलस्वरुप यह वातावरण में बढ़ी हुई नमी बारिश का कारण बनती है, परन्तु अधिक नमी होने से कई बार बादल फटने जैसी घटनाएं हो जाती हैं और एक ही स्थान पर अत्यधिक पानी बरसने से पूरे गांव के गांव बह जाते हैं जो कि अत्यंत दु:खद होता है। ग्लोबल वार्मिंग या विश्व तापीकरण का परिणाम पूरा विश्व भुगत रहा है

निष्कर्ष :- जलवायु परिवर्तन के लिए हम देखते हैं कि मनुष्य स्वयं जिम्मेदार है। अपनी पृथ्वी को बचाने के लिए हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। (1) अक्षय उर्जा का प्रयोग करना चाहिए, जैसे विद्युत चालक वाहन, सीएनजी युक्त वाहनों का प्रयोग करना चाहिए। कम से कम पेट्रोल या डीजल का प्रयोग करना चाहिए। (2) नदियों को स्वच्छ रखना चाहिए। (3) कीटनाशकों का प्रयोग न कर जैविक खाद का प्रयोग करना चाहिए। (4) पानी की बचत और उसका सदुपयोग करना चाहिए। (5) कार पूलिंग से यात्रा या कार्यालय जाना चाहिए। (6) सरकार को प्रदूषण नियंत्रित करने का प्रयास करना आदि। हमें स्वयं भी इसके लिए हर संभव प्रयत्न करना चाहिए।

संस्थान की गतिविधियां

संस्थान में हिन्दी दिवस माह

राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान में दिनांक 01 से 27 सितम्बर 2023 तक हिन्दी दिवस माह पूर्ण उत्साह के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों का आयोजन किया गया। हिन्दी दिवस माह के अवसर पर हस्ताक्षर दिवस, वाद-विवाद प्रतियोगिता (अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग), हिन्दी कार्यशाला, वाद-विवाद प्रतियोगिता (प्रोजैक्ट एवं संविदागत कर्मचारी वर्ग), टिप्पण-प्रारुपण प्रतियोगिता (प्रशासनिक कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए) एवं निबंध प्रतियोगिता (अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग) का आयोजन किया गया। संबंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. अनुप अन्वीकर के निर्देशन में सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के सहयोग से किया गया।

हिन्दी माह की प्रथम गतिविधि हस्ताक्षर दिवस का आयोजन दिनांक 01 सितम्बर 2023 को किया गया। इसके अंतर्गत संस्थान में सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को अपने सरकारी कामकाज में हस्ताक्षर अनिवार्य रुप से हिन्दी में करने का निर्देश दिया गया। तत्पश्चात् दिनांक 05 सितम्बर 2023 को अपराह्न 3 बजे से अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय- **मोबाइल फोन सुविधा या सिरदर्द: पक्ष/विपक्ष** था। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. हिम्मत सिंह, वैज्ञानिक-ई द्वारा किया गया और संबंधित प्रतियोगिता में निर्णायक के रुप में श्री शशिकांत उपाध्याय, डीआईजी, पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, महिपालपुर, नई दिल्ली एवं श्री कुमार पाल शर्मा,

वाद-विवाद प्रतियोगिता (अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग)

वाद-विवाद प्रतियोगिता (अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग)

वाद-विवाद प्रतियोगिता (अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग)

हिन्दी कार्यशाला में आभासी रुप से व्याख्यान देते हुए श्री बालेन्दु शर्मा दाधिच

उपनिदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग, दिल्ली को आमंत्रित किया गया था और संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने संबंधित प्रतियोगिता में उत्साह पूर्ण भाग लिया।

तत्पश्चात् दिनांक 06 सितम्बर 2023 को पूर्वाह्न 11 बजे से प्रशासन वर्ग में प्रशासनिक कार्य करने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों एवं क्षेत्रीय इकाईयों के लिए एक (ऑनलाइन/ऑफलाइन) वेब माध्यम से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय **"कंप्युटरीकरण के साथ राजभाषा हिंदी के बढ़ते कदम"** था। संबंधित कार्यशाला में व्याख्याता के रुप में श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच, निदेशक, भारतीय भाषाएं, माइक्रोसॉफ्ट को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का संचालन श्री दिनेश सोनी, प्रशासन अधिकारी द्वारा किया गया और कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नीलिमा मिश्र द्वारा की गई। डॉ. वंदना शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा व्याख्याता का परिचय देने के पश्चात् उन्होंने व्याख्याता को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया। श्री बालेन्दु दाधीच जी ने राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कंप्युटर की भूमिका पर जोर डालते हुए विभिन्न स्लाइडों के माध्यम से कंप्युटर पर सहजता से हिंदी में कार्य करने के विभिन्न तरीकों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने अत्यंत रोचक ढंग से कंप्युटर के विभिन्न टूल्स का व्यावहारिक ढंग से प्रयोग करने का अभ्यास कराया।

तत्पश्चात् दिनांक 12 सितम्बर 2023 को अपराह्न 3 बजे संस्थान के विभिन्न प्रोजैक्ट में कार्य कर रहे संविदागत कर्मचारियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय : **अपनी जड़ों से उखड़ती युवा पीढी जिम्मेदार कौन: शिक्षा पद्धति या परिवेश** था। संबंधित प्रतियोगिता में निर्णायक के रुप में श्री राकेश त्रिपाठी, प्रोफेसर,

हिन्दी कार्यशाला में भाग लेते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी

हिन्दी कार्यशाला में भाग लेते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी

वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेते प्रोजैक्ट कर्मचारी

वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेते प्रोजैक्ट कर्मचारी

राजधानी कॉलेज, राजागार्डन, दिल्ली एवं डॉ. नीलकंठ कुमार, सहायक प्रोफेसर, एनसीईआरटी, दिल्ली को आमंत्रित किया गया था। प्रतियोगिता का संचालय डॉ. रजनीकान्त दिक्षित, वैज्ञानिक-ई द्वारा किया गया। संबंधित प्रतियोगिता में कर्मचारियों ने बढ-चढ़ कर भाग लिया।

तत्पश्चात् दिनांक 13 सितम्बर 2023 को पूर्वाह्न 11 बजे से संस्थान के प्रशासनिक कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों के लिए टिप्पण-प्रारुपण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संबंधित प्रतियोगिता का संचालन संस्थान के लेखा अधिकारी श्री प्रदीप कुमार द्वारा किया गया। संबंधित प्रतियोगिता में 12 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

हिन्दी माह की अगली गतिविधि के अंतर्गत दिनांक 18 सितम्बर 2023 को पूर्वाह्न 11 बजे से संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए संयुक्त रुप से निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. नितिका, वैज्ञानिक-ई द्वारा किया गया। प्रतियोगिता का विषय "बढ़ता जलवायु परिवर्तन जिम्मेदार कौन" **एवं** "पढ़े बेटियां, बढ़े बेटियां को सफल बनाने में समाज का योगदान" था। संबंधित प्रतियोगिता में लगभग 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संस्थान द्वारा दिनांक 27 सितम्बर 2023 को हिन्दी माह की अंतिम गतिविधि पुरस्कार वितरण समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। हास्य कवि सम्मेलन में कवि के रुप में श्री अरुण जैमिनी जी एवं मुख्य अतिथि के रुप में श्रीमती मनीषा सक्सेना, वरिष्ठ उपमहानिदेशक, आईसीएमआर, दिल्ली को आमंत्रित किया गया। इस समारोह का संचालन डॉ. वंदना शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया। समारोह को आरंभ करते हुए सर्वप्रथम संस्थान द्वारा कवि श्री अरुण जैमिनी एवं

टिप्पण-प्रारुपण प्रतियोगिता में भाग लेते कर्मचारी

निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते कर्मचारी

संचालन करते हुए सहायक निदेशक (राजभाषा)

कवि श्री अरुण जैमिनी का स्वागत करते हुए निदेशक महोदय

निदेशक महोदय को प्लांटर देकर विधिवत स्वागत किया गया। इसके पश्चात् कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती मनीषा सक्सेना, वरिष्ठ महानिदेशक, आईसीएमआर को प्लांटर भेंट कर स्वागत किया गया और निदेशक महोदय द्वारा स्मृति चिह्न एवं डॉ नीलिमा मिश्र, वैज्ञानिक-जी द्वारा शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ करते हुए निदेशक महोदय ने अपने स्वागत भाषण में संबोधित करते हुए कहा कि संस्थान में आयोजित गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं का उद्देश्य राजभाषा को उसका उचित दर्जा दिलाना है। निदेशक महोदय के संबोधन के पश्चात् डॉ. वंदना शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा आमंत्रित कवि का परिचय देते हुए उन्हें काव्य-पाठ के लिए आमंत्रित किया। कवि श्री अरुण जैमिनी जी ने अपनी काव्य-धारा से सभी उपस्थित वैज्ञानिकों/अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि द्वारा राजभाषा संबंधी महत्वपूर्ण निर्देशों के बोर्ड का लोकार्पण किया गया।

इसी क्रम में कार्यक्रम की मुख्य गतिविधि पुरस्कार वितरण समारोह की ओर बढ़ते हुए वर्ष 2022-23 के दौरान संस्थान में राजभाषा हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु पुरस्कारों, संस्थान की प्रोत्साहन योजना के पुरस्कारों, प्रोत्साहन योजना (तकनीकी अधिकारी वर्ग) एवं प्रोत्साहन योजना (संविदागत एवं प्रोजैक्ट वर्ग) के पुरस्कारों की घोषणा डॉ. वंदना शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा की गई और संबंधित पुरस्कार मुख्य अतिथि एवं निदेशक महोदय के कर-कमलों से प्रदान किए गए। राजभाषा विभाग की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार श्री मोहन सिंह बिष्ट एवं श्री पवन कुमार, द्वितीय पुरस्कार श्री दीपक कुमार, श्री धीरज सिंह रावत, श्री अजय मित्रा एवं तृतीय पुरस्कार श्री प्रताप कुमार मंडल, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री प्रकाश नारायण, श्री रमाकान्त पाल एवं श्री शिशुपाल सिंह नेगी को प्रदान किया गया और

मुख्य अतिथि श्रीमती मनीषा सक्सेना का स्वागत करते निदेशक महोदय

काव्य-पाठ करते हुए श्री अरुण जैमिनी

राजभाषा संबंधी महत्वपूर्ण निर्देशों के बोर्ड का लोकार्पण

राजभाषा विभाग की प्रोत्साहन योजना का पुरस्कार लेते हुए श्री पवन मीणा

राजभाषा विभाग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार हिन्दी में अधिकाधिक डिक्टेशन देने का पुरस्कार श्री दिनेश सोनी, प्रशासन अधिकारी को प्रदान किया गया। इसके पश्चात् संस्थान की प्रोत्साहन योजना में श्री बृज मोहन शर्मा, श्री सुबोध कुमार त्यागी को प्रथम पुरस्कार, श्री वंशीधर, श्रीमती कामिनी गधोक, श्री राकेश जोशी को द्वितीय पुरस्कार एवं श्री राजकपूर मौर्य, श्रीमती तारा मोनिका टिग्गा, श्री अबरार अली, श्री शिवदर्शन सिंह रावत एवं श्री सुरेन्द्र नाथ राय को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया और संस्थान के निदेशक महोदय के निर्देशानुसार श्री जनेश्वर कुमार एवं श्री नरेन्द्र कुमार को हिन्दी में कार्य करने हेतु सांत्वना पुरस्कार दिया गया। इसके बाद प्रोत्साहन योजना (तकनीकी अधिकारी वर्ग) में श्री राम सिंह तोमर को प्रथम पुरस्कार एवं श्रीमती कमला नेगी और श्री राशिद परवेज को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

इसके साथ ही प्रोत्साहन योजना, संविदागत एवं प्रोजैक्ट वर्ग एवं टिप्पण-प्रारुपण प्रतियोगिता के पुरस्कारों की घोषणा संस्थान के डॉ. कैलाश चन्द्र पाण्डेय, वैज्ञानिक-एफ द्वारा की गई जिसमें श्रीमती मेधा को प्रथम पुरस्कार श्री जय सिंह एवं श्रीमती रजनी को द्वितीय पुरस्कार और श्री मोंटू एवं श्रीमती बरखा रानी को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया और टिप्पण-प्रारुपण प्रतियोगिता में श्री दीपक कुमार को प्रथम, श्री रामकान्त पाल को द्वितीय, श्री वंशीधर को तृतीय एवं श्री प्रताप कुमार मंडल तथा श्री प्रदीप दत्ता को प्रोत्साहन पुरस्कार मुख्य अतिथि महोदया एवं निदेशक महोदय के कर-कमलों से प्रदान किए गए, तत्पश्चात् निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कारों की घोषणा की गई जिसमें डॉ. तरुण वत्स, श्रीमती कमला नेगी को प्रथम, मुहम्मद राशिद परवेज तथा श्री दिनेश सोनी को द्वितीय, श्रीमती कामिनी गधोक और श्री गौरव कुमार को तृतीय तथा श्री दीपक कुमार एवं श्री जितेन्द्र परिहार को प्रोत्साहन पुरस्कार मुख्य अतिथि

अधिकाधिक डिक्टेशन का पुरस्कार लेते हुए श्री दिनेश सोनी

संस्थान की प्रोत्साहन योजना का पुरस्कार लेते श्री बृज मोहन शर्मा

प्रोत्साहन योजना (तकनीकी अधिकारी वर्ग) का पुरस्कार लेते श्री राम सिंह तोमर

प्रोत्साहन योजना, संविदागत एवं प्रोजैक्ट वर्ग का पुरस्कार लेते श्री जय सिंह

एवं निदेशक महोदय के कर-कमलों से पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके पश्चात् वाद-विवाद प्रतियोगिता (अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग) के पुरस्कारों की घोषणा डॉ. हिम्मत सिंह, वैज्ञानिक-ई द्वारा की गई जिसमें श्री राकेश जोशी तथा डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी को प्रथम पुरस्कार, डॉ. मृदुल मोहन, श्री सुबोध त्यागी को द्वितीय पुरस्कार, डॉ. नीलिमा मिश्र और डॉ. प्रवीण भारती को तृतीय पुरस्कार तथा श्री राम सिंह तोमर एवं श्री ललित माथुर को प्रोत्साहन पुरस्कार मुख्य अतिथि महोदय एवं निदेशक महोदय के कर-कमलों से पुरस्कार वितरित किए गए। अंत में वाद-विवाद प्रतियोगिता (संविदागत एवं प्रोजैक्ट वर्ग) की घोषणा डॉ. रजनीकान्त दिक्षित, वैज्ञानिक-ई द्वारा की गई जिसमें डॉ. सुप्रिया को प्रथम पुरस्कार, सुश्री बरखा रानी को द्वितीय, श्री अंकित को तृतीय तथा श्री अंकित झा और सुश्री ज्योति शर्मा को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया। संबंधित पुरस्कार मुख्य अतिथि एवं निदेशक महोदय के कर-कमलों से प्रदान किए गए।

अंतत: कार्यक्रम के अंत में माननीय अतिथि गणों श्रीमती मनीषा सक्सेना एवं श्री अरुण जैमिनी को निदेशक महोदय द्वारा स्मृति चिह्न भेंट किया गया। तत्पश्चात् विधिवत् रुप से समापन करने हेतु डॉ. नीलिमा मिश्र, वैज्ञानिक-जी ने सर्व प्रथम मुख्य अतिथि महोदया को धन्यवाद के साथ हिन्दी दिवस माह के दौरान आयोजित गतिविधियों का सफलता पूर्वक संचालन करवाने हेतु संस्थान के निदेशक महोदय और सभी संचालकों एवं उपस्थित वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। यही नहीं संस्थान में पधारे कविगणों का भी समारोह में पधारने के लिए विशेष रुप से आभार व्यक्त किया और इसके साथ ही उपस्थित श्रोताओं और विजेताओं को भी धन्यवाद दिया, जिनके सहयोग से इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

टिप्पण-प्रारुपण प्रतियोगिता का पुरस्कार लेते श्री दीपक कुमार

वाद-विवाद प्रतियोगिता (अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग) का पुरस्कार लेते श्री राकेश जोशी

वाद-विवाद प्रतियोगिता (प्रोजैक्ट वर्ग) का पुरस्कार लेते सुश्री बरखा रानी

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए डॉ. नीलिमा मिश्र

संस्थान की क्षेत्रीय इकाईयों में हिन्दी दिवस

संस्थान मुख्यालय ही नहीं वरन् संस्थान की 5 क्षेत्रीय इकाईयों में भी निर्देशानुसार हिन्दी दिवस पूर्ण हर्षोल्लास के साथ मनाया गया और कर्मचारियों को अपना सरकारी कामकाज राजभाषा में करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। क्षेत्रीय इकाईयों में प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी में कार्य करने की झिझक को समाप्त करने के प्रयास की दिशा में कदम उठाया गया। इसी क्रम में रायपुर, बंगलुरु, रांची, गुवाहाटी एवं नडियाद क्षेत्रीय इकाईयों में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय इकाई, रायपुर

संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, रायपुर में 20 सितम्बर 2023 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर संबंधित क्षेत्रीय इकाई द्वारा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में क्षेत्रीय इकाई के अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा बढ़ चढ़ कर भाग लिया। मुख्य अतिथि के रुप में जवाहर नवोदय विद्यालय, रायपुर के स्नात्कोतर शिक्षक (हिन्दी) श्री सियाराम पाठक को आमंत्रित किया गया था। अतिथि महोदय द्वारा निबंध प्रतियोगिता की प्रतियों का मूल्यांकन किया गया और श्री उदवीर सिंह को प्रथम, श्री राजेश कुमार को द्वितीय, श्री रमेश कुमार शर्मा को तृतीय तथा श्री कृष्ण कुमार गुप्ता एवं श्री लोचन मोहन्ती को प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चुना गया। अंत में अतिथि महोदय को धन्यवाद के साथ समारोह का समापन हुआ।

क्षेत्रीय इकाई, बंगलुरु

संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, बंगलुरु में 21 सितम्बर 2023 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ.शुभांगी पिंगले, वैज्ञानिक-डी, क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र (द.) बंगलुरु को मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित किया गया था। क्षेत्रीय इकाई, बंगलुरु द्वारा इस अवसर पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा संबंधित प्रतियोगिता का विषय : **"बच्चों की शिक्षा में माता-पिता का योगदान सही है या बच्चों के मन से की गई शिक्षा सही है।** या **जेम का उपयोग सरकार के लिए सही या गलत"** था। प्रतियोगिता में श्री राजेन्द्र प्रसाद तिवारी को प्रथम, श्री के.वी. सुरेश कुमार को द्वितीय, श्रीमती वैशाली वरकडे को तृतीय तथा सनल कुमार और श्री बाल्मीकी बारीका को प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चुना गया। हिन्दी दिवस का समापन प्रभारी अधिकारी द्वारा मुख्य अतिथि एवं समस्त अधिकारियों और धन्यवाद के साथ सम्पन्न हुआ।

क्षेत्रीय इकाई, गुवाहाटी

संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, गुवाहाटी में 21 सितम्बर 2023 को हिन्दी दिवस के अवसर पर निबंध लेखन प्रतियोगता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रुप में कॉटन विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. अंजना सिंघा को आमंत्रित किया गया था। संबंधित प्रतियोगिता में सुश्री के. अर्निका देवी ने प्रथम, डॉ. नाओरेमा चाओबा देवी ने द्वितीय, श्री कानू राम दास ने तृतीय और श्री बाबुल रहांग तथा श्री मनेश्वर बसुमतारी ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। हिन्दी दिवस का समापन प्रभारी अधिकारी द्वारा मुख्य अतिथि एवं समस्त अधिकारियों और धन्यवाद के साथ सम्पन्न हुआ।

क्षेत्रीय इकाई, रांची

राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय इकाई, रांची में 14 सितम्बर 2023 को अत्यंत हर्षोल्लास

के साथ हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय इकाई में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय : **मोबाइल समाज के लिए वरदान या अभिशाप** था। संबंधित प्रतियोगिता में 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रभारी अधिकारी, रांची द्वारा आयोजित प्रतियोगिता के पुरस्कारों की घोषणा की, जिसमें श्रीमती प्रतिमा लेंका, ने प्रथम, सुश्री रीता कुमारी, ने द्वितीय, श्री मोहित महतो ने तृतीय और श्री अजीत दिवेदी तथा श्री राम बचन गुप्ता को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। हिन्दी दिवस का समापन प्रभारी अधिकारी द्वारा समस्त अधिकारियों और धन्यवाद के साथ सम्पन्न हुआ।

क्षेत्रीय इकाई, नडियाद

संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, नडियाद में 25 सितम्बर 2023 को निबंध प्रतियोगिता के आयोजन के साथ हिन्दी दिवस मनाया गया। इस प्रतियोगिता में क्षेत्रीय इकाई, नडियाद के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हर्षोल्लास के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रुप में सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आणंद के प्राध्यापक डॉ. अंजु कुंजड़िया को आमंत्रित किया गया था। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में अधिकारियों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए हिन्दी में कार्य करने का आग्रह किया गया। प्रतियोगिता का आयोजन पूर्वाह्न 11 बजे से आरंभ हुआ। निबंध प्रतियोगिता का विषय - **"इंटरनेट के फायदे एवं नुकसान"** था। प्रतियोगिता का मूल्यांकन भाषा, शैली एवं विचारों के आधार पर मुख्य अतिथि द्वारा किया गया और श्री एस.के. शुक्ला को प्रथम, श्री आर.जी. पटेल को द्वितीय, श्री आवर राम को तृतीय और कु. नीलांजना जाना तथा कु. मनीषा दास को प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चुना गया। हिन्दी दिवस का समापन प्रभारी अधिकारी डॉ. राजेन्द्र कुमार बहारिया, प्रभारी अधिकारी द्वारा मुख्य अतिथि एवं समस्त अधिकारियों को धन्यवाद ज्ञापित किए जाने के साथ सम्पन्न हुआ।

• संस्थान में पारंगत प्रशिक्षण

संस्थान के निदेशक डॉ. अनुप अन्वीकर के नेतृत्व एवं पहल से राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रपति महोदय के आदेशानुसार केन्द्र सरकार के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सरकारी कामकाज हिन्दी में करने एवं दक्ष बनाने हेतु राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, हिन्दी शिक्षण योजना की नामित प्राध्यापिका श्रीमती शोभा कुजूर द्वारा 'जुलाई-नवम्बर 2023' में आयोजित सत्र में संस्थान के 29 वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को "पारंगत" प्रशिक्षण प्रदान किया गया। सत्र के दौरान प्रत्येक मंगलवार और गुरुवार को पूर्वाह्न 10.30 बजे से मध्याह्न 12.30 बजे तक प्रशिक्षण दिया गया। इसके अंतर्गत कुछ कक्षाएं सामान्य हिंदी, व्याकरण पर आधारित थी और कुछ कक्षाएं कार्यालयीन भाषा पर आधारित थी। इसके अतिरिक्त कार्यालयीन प्रयोग में आने वाले सभी प्रकार के पत्र, ज्ञापन, परिपत्र, संकल्प, अधिसूचना आदि के प्रारुप और मुख्य सामग्री पर विशेष जोर दिया गया। संबंधित कक्षाओं में प्रतिभागी वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने नियमित रुप से भाग लेकर इसे सफल बनाया। पारंगत परीक्षा परिणाम दिसम्बर 2023 में घोषित किए गए, जिसमें 23 प्रतिभागियों ने 70 प्रतिशत से अधिक अंक और 5 प्रतिभागियों ने 60 से अधिक अंक प्राप्त किए। सभी 28 प्रतिभागियों को उनकी प्रतिशतता के अनुसार पुरस्कार राशि का नकद भुगतान किया गया। यही नहीं निदेशक महोदय द्वारा आरंभ की गई इस पहल का मुख्य उद्देश्य संस्थान के सभी वैज्ञानिकों/अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पारंगत प्रशिक्षण प्रदान करना है। इसलिए इस सत्र के पश्चात् आगे भी यह क्रम जारी रहेगा।

पारंगत प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे संस्थान के प्रशिक्षणार्थी

संस्थान की गतिविधियां

- **आईसीएमआर-एनआईएमआर, आईसीएमआर-एनआईटीएम और आईसीएमआर-एनएआरआई में नई सुविधाओं का उद्घाटन/शिलान्यास एवं आईसीएमआर-एनआईएमआर का वार्षिक दिवस समारोह।**

दिनांक 14 दिसम्बर 2023 को संस्थान परिसर में आईसीएमआर- एनआईएमआर, आईसीएमआर-एनआईटीएम और आईसीएमआर-एनएआरआई में नई सुविधाओं का उद्घाटन/शिलान्यास किया गया और इसी के साथ ही संस्थान का वार्षिक दिवस समारोह अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर अत्यंत गर्व की बात है कि मुख्य अतिथि के रुप में डॉ. मनसुख मांडविया, माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण एवं रसायन व उर्वरक मंत्री, भारत सरकार और विशिष्ट अतिथि के रुप में प्रो. एस.पी. सिंह बघेल, माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार एवं डॉ. भारती प्रवीण पवार, माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण एवं जनजातीय कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार की गरिमामयी उपस्थिति में भव्य आयोजन किया गया।

पूर्व चिकित्सीय अनुसंधान सुविधा के उद्घाटन के पश्चात् इनोवेशन कॉम्प्लेक्स, अतिथि गृह, सम्मेलन कक्ष, सभागार आदि सुविधाओं का उद्घाटन भी मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस पावन अवसर पर सचिव, डीएचआर एवं महानिदेशक, आईसीएमआर की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर ऑनलाइन रुप से आईसीएमआर-एनआईटीएम, बेलगावी और आईसीएमआर-एनएआईआर, पुणे की अधिकारियों और कर्मचारियों की भी उपस्थिति रही। यह सभी सुविधाएं 2030 तक मलेरिया उन्मूलन की दिशा में मद्दगार साबित होंगी। इस समग्र कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना शर्मा, सहायक निदेशक ने किया।

नई चिकित्सीय सुविधाओं के उद्घाटन के पश्चात् मुख्य अतिथि डॉ. मनसुख मांडविया, माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण एवं रसायन व उर्वरक मंत्री, भारत सरकार सहित सम्मानित विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया गया। तत्पश्चात् दीप प्रज्जवलन के साथ ही मां सरस्वती की आराधना की गई। इसके पश्चात् माननीय मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों, सचिव, डीएचआर एवं महानिदेशक, आईसीएमआर डॉ. राजीव बहल द्वारा पुष्प भेट कर एवं शॉल पहनाकर विधिवत् रुप से स्वागत किया गया।

मुख्य अतिथियों के स्वागत के पश्चात् डॉ. राजीव बहल, सचिव, डीएचआर एवं महानिदेशक, आईसीएमआर द्वारा स्वागत भाषण में बताया कि एकेडमी एसीएसआईआर के साथ भारत में पहली बार बनी है। इसके पश्चात् मुख्य अतिथि डॉ. मनसुख मांडविया के कर-कमलों द्वारा आभासी रुप से बेलगावी में आईसीएमआर-राष्ट्रीय पारंपरिक चिकित्सा विज्ञान संस्थान (एनआईटीएम) के नए भवन का उद्घाटन किया गया और इस संबंध में एक वीडियों भी प्रस्तुत की गई। इसके पश्चात् आईसीएमआर-राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान (एनएआरआई), पुणे की बीएसएल-3 सुविधाओं का भी आभासी रुप से शिलान्यास किया गया और वीडियो के माध्यम से एक संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की गई। इसके बाद संस्थान की विभिन्न पूर्व चिकित्सीय अनुसंधान सुविधाओं, इनोवेशन कॉम्प्लैक्स, अतिथि गृह, सम्मेलन कक्ष और सभागार आदि की झलक एवं संक्षिप्त जानकारी वीडियों के माध्यम से प्रस्तुत की गई।

इसके पश्चात् संस्थान में 25 वर्ष की सेवा पूर्ण किए जाने पर मुख्य अतिथि, डॉ. मनसुख मांडविया द्वारा संस्थान के श्री संजीव गुप्ता को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही श्री पंकज सिंह को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय कोच के रुप में सेवाएं प्रदान करने हेतु स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि द्वारा संस्थान के सम्मेलन कक्ष में उपस्थित सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित किया। अपने संबोधन भाषण में उन्होंने बताया कि किसी भी राष्ट्र को आगे बढ़ने के लिए अनुसंधान एवं नवाचार को प्राथमिकता/प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने जय विज्ञान, जय अनुसंधान का नारा देश को दिया है। अनुसंधान से जुड़े सभी व्यक्तियों को सभी प्रकार की सुविधाएं मुहैया करवाई जाएं। कोविड संकट के दौरान स्वास्थ्य के क्षेत्र में जो भारत ने अपनी भूमिका निभाई, उससे विश्व में भारत के प्रति अपने नजरिए को बदल डाला है। मोल्युक्युलर डिस्ट्रॉफि की औषधि बहुत महंगी है, ग्लोबल साउथ फैलोशिप भारत के पास आ गई है।

मुख्य अतिथि के संबोधन के पश्चात् सचिव, डीएचआर एवं महानिदेशक, आईसीएमआर द्वारा माननीय मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट किए गए। कार्यक्रम के विधिवत समापन हेतु संस्थान के निदेशक, डॉ. अनुप अन्वीकर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन ज्ञापित किया गया और कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रथम चरण की समाप्ति के पश्चात् कार्यक्रम के द्वितीय चरण में डॉ. वी.के. पॉल, सदस्य, नीति आयोग, डॉ. राजीव बहल, सचिव, डीएचआर एवं महानिदेशक, आईसीएमआर, श्रीमती ऋचा खोड़ा, संयुक्त सचिव, डीएचआर, श्रीमती अनु नागर, संयुक्त सचिव, डीएचआर, प्रोफेसर मनोज धर, निदेशक, एसीएसईआर द्वारा वार्षिक दिवस संभाषण प्रस्तुत किया गया, जिसका संचालन संस्थान की वैज्ञानिक-जी, डॉ. नीलिमा मिश्र द्वारा किया गया।

सर्वप्रथम राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के निदेशक, डॉ. अनुप अन्वीकर द्वारा उपस्थित सभी अतिथियों का प्लांटर एवं शॉल भेंट कर स्वागत किया गया। इसके बाद निदेशक महोदय ने अपना स्वागत

भाषण के दौरान बताया कि 1977 में स्थापित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान निरंतर मलेरिया उन्मूलन कम करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आईसीएमआर एवं एसीएसईआर द्वारा समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किए गए हैं जिसका उद्देश्य चिकित्सा विज्ञान अनुसंधान संकाय को हमारे संस्थान परिसर में स्थापित करना है। दिनांक 13 दिसम्बर 2023 को संस्थान परिसर में वैज्ञानिक एवं नवोन्वेषी अनुसंधान अकादमी (एसीएसआईआर) एवं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के मध्य समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर समारोह मनाया गया। आईसीएमआर एवं डीएचआर के सभी संस्थानों में पी.एचडी कर रहे छात्र अब से एसीएसआईआर से संम्बद्ध माने जाएंगे। इस जानकारी के पश्चात् डॉ. वी.के. पॉल, सदस्य नीति आयोग द्वारा वार्षिक दिवस संभाषण प्रस्तुत किया गया।

अपने संभाषण में डॉ. पॉल ने सर्वप्रथम संस्थान के सेवाकाल के 46 गौरवशाली वर्ष व्यतीत करने एवं नवीन चिकित्सीय सुविधाओं के उद्घाटन की बधाई दी। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि संसाधन बहुत कठिन प्रयासों से मुहैया कराए जाते हैं। अत: इनका प्रयोग बहुत समझदारी एवं कर्मठता के साथ किया जाना चाहिए। इस संकल्प के साथ काम शुरु करें कि वर्ष 2030 तक मलेरिया का पूर्ण रुप से उन्मूलन हो जाए। इसके पश्चात् उन्होंने स्लाइड्स के माध्यम से भारत इंडियन वैक्सीनेशन की यात्रा पर प्रकाश डाला। दिनांक 11.03.2020 को एनआईवी, पुणे द्वारा एसएआरएस-कोविड-2 आइसोलेशन एक्सैस का संवर्धन किया गया। इसके पश्चात् दिनांक 18 मार्च 2020 को प्रभावी टीका बनाने की आवश्यकता पर चर्चा की गई। आईसीएमआर द्वारा भारत बॉयोटैक के द्वारा कोवैक्सीन का निर्माण किया गया (टीम-आईसीएमआर-एनआईवी)। इस राष्ट्रीय कोविड-19 टीकाकरण के मजबूत स्तंभ रहे - अनुभव, लोजिस्टिक प्रबंधन, टीका प्रदान करना, एईएफआई प्रणाली इत्यादि। 98 प्रतिशत खुराकें जन-स्वास्थ्य प्रणाली के माध्यम से नि:शुल्क लगाई गई।

हमें विज्ञान अकेडमी, उद्योग, सरकार सभी को आपसी सहयोग से हर कार्य करना चाहिए। तत्पश्चात् डॉ. राजीव बहल, सचिव, डीएचआर एवं महानिदेशक, आईसीएमआर द्वारा संबोधित किया गया। अपने संबोधन में डॉ. बहल ने बताया कि आने वाले समय में हमें एनीमिया, शिशु कुपोषण आदि क्षेत्रों में भी अपनी जज्बे के साथ प्रयासरत रहना चाहिए।

इसके पश्चात् संस्थान के निदेशक महोदय द्वारा उपस्थित सभी अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर महानिदेशक, आईसीएमआर द्वारा संस्थान की पूर्व निदेशक डॉ. सरला के. सुब्बाराव, और डॉ. नीना वलेचा को भी स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ. नीलिमा मिश्र, वैज्ञानिक-जी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

संस्थान की गतिविधियां

• स्वच्छता संबंधी गतिविधियां

इस छ:माही यानि जुलाई-दिसम्बर 2023 के दौरान भी नियमानुसार संस्थान में पर्यावरण, सुरक्षा एवं स्वस्थ वातावरण बनाए रखने के उद्देश्य से स्वच्छता गतिविधियों के अंतर्गत संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों के सहयोग से प्रतिमाह विविध श्रमदान गतिविधियों का आयोजन किया गया।

- संस्थान में दिनांक 22.08.2023 को श्रमदान गतिविधि का आयोजन किया किया जिसमें कैंटीन परिसर और उसके आसपास की सफाई के साथ-साथ "कैंटीन को साफ रखने" के संबंध में पोस्टर, पैंपलेट भी लगाए गए। इस माह के दौरान संस्थान की आईईसी प्रभाग द्वारा क्षेत्रीय इकाई, हरिद्वार की गतिविधियों पर लघु फिल्म और फोटो फीचर बनाने के लिए दौरा किया गया।

- दिनांक 20 सितम्बर 2023 को संस्थान के मुख्य गेट नं.-1 के आसपास के क्षेत्र में श्रमदान गतिविधि का आयोजन किया गया। क्षेत्र की सफाई प्रतिनियुक्त कर्मचारियों के साथ ही हाउसकीपिंग स्टाफ द्वारा की गई। सभी कर्मचारियों को स्वच्छता के महत्व पर एक छोटा सा व्याख्यान भी दिया गया।

- अक्टूबर 2023 के दौरान स्वच्छता संबंधी सभी गतिविधियां संस्थान परिसर के साथ-साथ परिसर के बाहरी क्षेत्र की सफाई की गई। द्वारका सैक्टर-8 पार्क को एनआईएमआर कर्मचारियों द्वारा साफ किया गया और गतिविधियों की

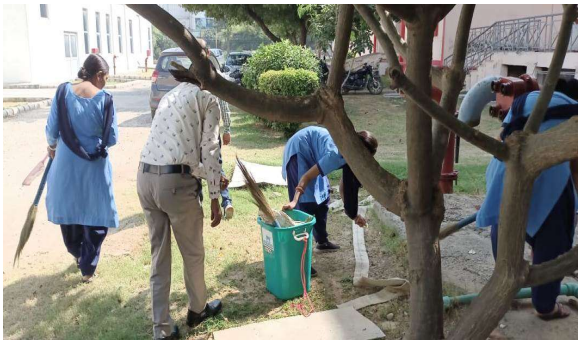

तस्वीरें एमओएचयूए के पोर्टल पर अपलोड की गई। इसके अतिरिक्त पास के दो विद्यालयों में स्वच्छता जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्रों को स्वच्छता पर एक अधिकारिक वीडियों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय फिल्म एवं आईसीएमआर-एनआईएमआर के आईआईएफओं द्वारा प्रस्तुतीकरण भी दिखाया गया। इसके अलावा एमओएचएफडब्ल्यु, डीएचआर, आईसीएमआर और संबंधित संगठनों को टैग करते हुए सोशल मीडिया पर नियमित रुप से अपलोडिंग की गई।

- आईसीएमआर से प्राप्त मेल दिनांकित 23.09.2023 के अनुसार एनआईएमआर के कार्यालय आदेश दिनांकित 29.09.2023 का अनुसरण करते हुए, प्रभारी, एनआईएमआर, क्षेत्रीय इकाई, बंगलुरु द्वारा दिनांक 01.10.2023 को बंगलुरु के कन्नमंगला बस स्टॉप पर स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया, जिसके तहत आसपास के कचरे की सफाई की गई एवं बस स्टॉप को कीटाणु रहित किया गया। इसके साथ ही, "स्वच्छता ही सेवा" अभियान भी आयोजित किया गया।

- दिनांक 21 नवम्बर 2023 को श्रमदान गतिविधि के अंतर्गत प्लास्टिक कचरे की सफाई की गई जिसमें संस्थान के छात्रों ने भी भाग लिया।

- दिसम्बर माह के दौरान, माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री द्वारा उद्घाटन/शिलान्यास समारोह में पधार कर संस्थान परिसर का दौरा किया गया, जिसके अंतर्गत पूरे संस्थान परिसर की सफाई की गई

एवं गमले और वृक्षारोपण किया गया। संबंधित श्रमदान में संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया।

संस्थान की गतिविधियां

• "संस्थान में राष्ट्रीय खेल दिवस"

खेल विभाग, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के अनुदेशों का अनुपालन करते हुए एनआईएमआर, दिल्ली परिसर में खेलों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। राष्ट्रीय खेल दिवस भारत में प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है। यह दिवस हम सभी के लिए एथलीटों के योगदान, दृढ संकल्प और असाधारण उपलब्धियों और समाज को आकार देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को समर्पित है। वर्ष 2019 में राष्ट्रीय खेल दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री द्वारा फिट इंडिया मिशन का भव्य शुभारंभ हुआ, जिसने देश में खेल और फिटनेस की संस्कृति को विकसित करने के लिए बड़े आंदोलन का नेतृत्व किया है। इस वर्ष राष्ट्रीय खेल दिवस की थीम "स्पोर्टस एज़ एन एनेबलर फॉर एन इनक्ल्युजिब एण्ड फिट सोसायटी" थी। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर दिनांक 28 एवं 29 अगस्त 2023 को विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं जैसे - फुटबाल टुर्नामेन्ट, बैडमिंटन, लैमन रेस, टग ऑफ वॉर इत्यादि रोचक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इसके साथ ही संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने फिट इंडिया शपथ ग्रहण की। सभी खेलों के विजेताओं को दिनांक 29 अगस्त 2023 को आयोजित समारोह में पुरस्कृत किया गया।

संस्थान की गतिविधियां

• सतर्कता दिवस

परिषद मुख्यालय के निर्देशों का अनुसरण करते हुए संस्थान परिसर में दिनांक 30 अक्टूबर से 5 नवम्बर 2023 तक सतर्कता जागरुकता सप्ताह मनाया गया। केन्द्रीय सतर्कता आयोग ने दिनांक 31 अक्टूबर 2000 को सरदार बल्लभभाई पटेल के जन्म दिन से आरंभ होने वाले सप्ताह को सतर्कता जागरुकता सप्ताह के रुप में मनाने की परंपरा आरंभ हुई। केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा इस वर्ष सतर्कता जागरुक्ता सप्ताह की थीम थी - 'भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें"। इस उपलक्ष में संस्थान के प्रवेश द्वार पर बैनर लगाया गया। संस्थान द्वारा इस विषय से संबंधित विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गई और इसमें अधिक से अधिक प्रतिभागिता सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया। सतर्कता दिवस 2023 के अवसर पर संस्थान के सम्मेलन कक्ष में सीवीसी, पीआईडीपीआई के संबंध में जानकारी एवं सूचना फैलाने हेतु सतर्कता, पीआईडीपीआई शिकायतों पर सतर्कता समिति द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। इसके साथ ही दिनांक 30.10.2023 को पूर्वाहन 11 बजे संस्थान के प्लाजा हाल में सतर्कता शपथ ली गई एवं क्विज प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया और प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

संस्थान की गतिविधियां

• प्रशिक्षण

- दिनांक 2 से 4 अगस्त 2023 तक आईसीएमआर-एनआईएमआर, नई दिल्ली और मेरा इंडिया द्वारा वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों के लिए मलेरिया रोगवाहकों पर कीटनाशक प्रतिरोधकता प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें 5 आईसीएमआर संस्थानों से 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

- डॉ. मृदुल मोहन, वैज्ञानिक-सी ने आईवीआई के 22वें अंतर्राष्ट्रीय वैक्सीनोलॉजी पाठ्यक्रम पर अंतर्राष्ट्रीय वैक्सीन संस्थान, सियोल, दक्षिण कोरिया में वैक्सीनोलॉजी प्रशिक्षण में भाग लिया। इस पाठ्यक्रम से वैक्सीन विकार/अनुसंधान को समग्र रुप से समझने में मदद मिली। वैक्सीनोलॉजी पाठ्यक्रम में वैक्सीन अनुसंधान क्षेत्र में विश्व अग्रणी वैज्ञानिकों की बातचील सुनने, आईवीआई द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं से उनके अत्याधुनिक अनुसंधान पर अद्यतन जानकारी प्राप्त होने के साथ ही दुनियाभर के संभावित शोधकर्ताओं से मिलने का मौका प्राप्त हुआ।

- आईसीएमआर-एनआईएमआर की क्षेत्रीय इकाई, चैन्नई द्वारा दिनांक 25 से 28 सितम्बर 2023 तक "मलेरिया रोगवाहक में कीटनाशक प्रतिरोधकता" पर 4 दिवसीय व्यावहारिक प्रशिक्षण का आयोजन किया। प्रशिक्षण में मलेरिया रोगवाहक में कीटनाशक प्रतिरोधकता, दिशा-निर्देशों और एसओपी, वयस्क मच्छरों में कीटनाशकों के प्रति संवेदनशीलता और प्रतिरोधकता का निर्धारण, मच्छरों के जैव रासायनिक और आणविक लक्षण वर्णन, कीटनाशक प्रतिरोधकता क्षेत्र की निगरानी और प्रबंधन के लिए दिशा-निर्देशों पर व्याख्यान शामिल थे। *(संकाय : डॉ. के. राघवेन्द्र और डॉ. वैशाली वर्मा) प्रतिभागी*

- डॉ. ऐलैक्स एप्पन, वैज्ञानिक-एफ ने दिनांक 4 से 8 सितम्बर 2023 तक ग्लोबल हैल्थ में तीसरे इंटरनेशनल समर स्कूल में भाग लिया (मॉडयूल-3:बॉयोमेडिकल डेटा साईंस और मशीन लर्निंग का परिचय) में भाग लिया।

- नेशनल एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंसिज (एनएएमएस इंडिया) और एमएस रमैया मेडिकल कॉलेज, बंगलुरु में डॉ. वाणी एच.सी., वैज्ञानिक-डी, एनआईएमआर को अतिथि वक्ता के रुप में आमंत्रित किया गया।

- आईसीएमआर-एनआईएमआर, क्षेत्रीय इकाई, नडियाद द्वारा प्रयोगशाला तकनीशियनों हेतु मलेरिया माइक्रोस्कोपी प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

- एचएचएस प्रोजैक्ट हेतु प्रोजैक्ट रिपोर्ट को अंतिम रुप देने के लिए संस्थान की क्षेत्रीय इकाई बंगलुरु के सम्मेलन कक्ष में 2 दिवसीय बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान एवं क्षेत्रीय इकाईयों के सभी सीओपीआई के साथ ही निदेशक, एनआईएमआर एवं निदेशक, वीसीआरसी भी उपस्थित हुए।

- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद एवं वैज्ञानिक एवं नवोन्वेषी अनुसंधान अकादमी एमआए के मध्य दिनांक 13.12.2023 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इससे चिकित्सीय अनुसंधान के क्षेत्र में क्षमता निर्माण में मदद मिलेगी और भारत में अनुसंधान की स्थिति भी मजबूत बनेगी। एसीएसओआर में चिकित्सीय अनुसंधान का एक नया संकाय स्थापित किया जाएगा, जिसके द्वारा देश में अनुसंधान के अनेक वैज्ञानिक विषयों को समर्थन दिया जाएगा।

- एनआईएमआर, क्षेत्रीय इकाई, नडियाद (गुजरात) में एनआईएचयूएसए द्वारा हमारे प्रोजैक्ट शीर्षक "आर्द्रता के संबंध में शहरी मलेरिया संचारण हेतु थर्मल अपयुक्तता को पुन: परिभाषित करना" की शुरुआत की गई।

- आईसीएमआर-एनआईएमआर, क्षेत्रीय इकाई, नडियाद (गुजरात) द्वारा दिनांक 11 से 15 दिसम्बर 2023 तक गुजरात के विभिन्न जिलों के पीएचसी, सीएचसी, जिला अस्पताल, सिविल अस्पताल से 25 प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए क्षमता निर्माण प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

जुलाई-दिसम्बर 2023 के दौरान संस्थान के सेवा-निवृत्त वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी

आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान को जीवन-पर्यन्त अपनी सेवाएं प्रदान करने के बाद पूरे सम्मान के साथ सेवा-निवृत्ति प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को संस्थान परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद देकर उऋण नहीं हो सकते वरन् अपनी मेहनत,निष्ठा से संस्थान को विकास एवं प्रगति की ओर अग्रसर करने में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करने हेतु हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए उनके स्वस्थ रहने की शुभकामनाएं करते हैं। संस्थान से सेवा-निवृत्त होने वाले कर्मचारियों के नाम निम्न प्रकार हैं:-

क्र.सं.	वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	सेवा-निवृत्ति की दिनांक
1	श्री अलख देव प्रसार	वरिष्ठ तकनीशियन-2	31.07.2023
2	श्री अशोक कुमार	एफएलए	31.07.2023
3	श्रीमती पूनम गुप्ता	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी-1	31.08.2023
4	श्री जी.एल. पुरी	अनुभाग अधिकारी	31.08.2023
5	श्री निर्मल सिंह	वाहन चालक	31.08.2023
6	श्री राजेश कुमार शर्मा	लैब अटेंडेंट-1	31.08.2023
7	श्री हरमन मिंज़	कीट संग्राहक	31.08.2023
8	श्री आर.सी. सेठी	अवर श्रेणी लिपिक	31.08.2023
9	श्री बल्लभ कुमार शर्मा	कंप्युटर प्रोग्रामर	30.09.2023
10	श्री टिकेश्वर साहु	चौकीदार	30.09.2023
11	श्री राजेन्द्र प्रसाद तिवारी	लैब अटेंडेंट-1	31.10.2023
12	सुश्री प्रतिक्षा जे. देसाई	एसटीओ-2	31.12.2023
13	श्री जानेश्वर कुमार	चपरासी	31.12.2023
14	श्री रजनीश कुमार	फील्ड वर्कर	31.12.2023
15	श्री बिशन प्रकाश शर्मा	लैब अटेंडेंट-1	31.12.2023
16	श्री अशोक कुमार बोरा	चौकीदार	31.12.2023

जुलाई-दिसम्बर 2023 के दौरान संस्थान के नवनियुक्त वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी

आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के विकास सोपानों के दौरान कई अधिकारी/कर्मचारी सेवा-निवृत्त होते हुए इसकी बागडोर नव-नियुक्त अधिकारियों/कर्मचारियों को सौंपते गए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों के आगमन पर संस्थान परिवार उनका हार्दिक स्वागत करता है। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि संस्थान के निम्नलिखित वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी अपने बौद्धिक ज्ञान, प्रतिभा, मेहनत एवं निष्ठा से संस्थान को उन्नति की ओर अग्रसर करने में अपना उल्लेखनीय योगदान प्रदान करेंगे।

क्र.सं.	वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	संस्थान में कार्य ग्रहण करने की दिनांक
1.	डॉ. तरुण कुमार वत्स	वैज्ञानिक-बी	20.07.2023
2	श्री इन्द्र सिंह	प्रयोगशाला तकनिशियन	15.08.2023
3	श्री रोहन	प्रवर श्रेणी लिपिक	01.09.2023
4	श्री हर्ष वर्धन अटल	सहायक	27.09.203
5	डॉ. रिमा कुमावत	वैज्ञानिक-सी	20.10.2023
6	डॉ. अनु प्रिया मिन्हास	वैज्ञानिक-बी	27.10.2023
7	श्री सुमित	सहायक	01.11.2023
8	श्री जितेन्द्र कुमार	लेखा अधिकारी	01.11.2023
9	डॉ. प्रवीण कुमार अतुल	वैज्ञानिक-एफ	30.11.2023
10	डॉ. श्वेता भान	वैज्ञानिक-सी	31.12.2023